१. गागर में सागर

–बिहारी

श्रवणीय

किसी संत कवि के पद/दोहों का आनंदपूर्वक रसास्वादन करते हुए श्रवण कीजिए :–

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

- संत कवियों के नाम पूछें । • उनकी पसंद के संत कवि का चुनाव करने के लिए कहें ।
- पसंद के संत कवि के पद/दोहों का सी.डी. से रसास्वादन करते हुए श्रवण करने के लिए कहें ।
- कोई पद/दोहा सुनाने के लिए प्रोत्साहित करें ।

या अनुरागी चित्त की, गति समुझै नहिं कोइ ।
ज्यों–ज्यों बुड़ै स्याम रंग, त्यों–त्यों उज्जलु होइ ।।

घरु–घरु डोलत दीन ह्वै, जनु–जनु जाचतु जाइ ।
दियैं लोभ–चसमा चखनु, लघु पुनि बड़ों लखाइ ।।

कनक–कनक तैं सौ गुनी, मादकता अधिकाइ ।
उहिं खाए बौराइ जगु, इहिं पाए बौराइ ।।

गुनी–गुनी सबके कहैं, निगुनी गुनी न होतु ।
सुन्यौ कहूँ तरु अर्क तै, अर्क समान उदोतु

नर की अरु नल नीर की, गति एकै करि जोइ ।
जै तो नीचौ ह्वै चलै, ते तौ ऊँचौ होइ ।।

अति अगाधु अति औथरौ, नदी कूप सरु बाइ ।
सो ताकौ सागरु जहाँ, जाकी प्यास बुझाइ ।।

बुरौ बुराई जो तजै, तौ चितु खरौ सकातु ।
ज्यौं निकलंक मयंकु लखि, गनैं लोग उतपातु ।।

समै–समै सुंदर सबै, रूप–कुरूप न कोइ ।
मन की रुचि जेती जितै, तित तेती रुचि होइ ।।

परिचय

जन्म : सन १५९५ के लगभग ग्वालियर में हुआ । **मृत्यु :** १६६४ में हुई । बिहारी ने नीति और ज्ञान के दोहों के साथ – साथ प्रकृति चित्रण भी बहुत ही सुंदरता के साथ प्रस्तुत किया है ।

प्रमुख कृतियाँ : बिहारी की एकमात्र रचना सतसई है । इसमें ७१९ दोहे संकलित हैं। सभी दोहे सुंदर और सराहनीय हैं ।

पद्य संबंधी

दोहा : इसका प्रथम और तृतीय चरण १३–१३ तथा द्वितीय और चतुर्थ चरण ११–११ मात्राओं का होता है ।

प्रस्तुत दोहों में कविवर बिहारी ने व्यावहारिक जगत की कतिपय नीतियों से अवगत कराया है ।

शब्द संसार

बौराइ (स्त्री.सं.) = पागल होना, बौराना
निगुनी (वि.) = जिसमे गुण नहीं
अर्क (पुं.सं.) = रस, सूर्य
उदोतु (पु.सं.) = प्रकाश
अरु (अव्य.) = और
अगाधु (वि.) = अगाध
सरु (पुं.सं) = सरोवर
निकलंक (वि.) = निष्कलंक, दोषरहित
मयंकु (पुं.सं.) = चंद्रमा
उतपातु (पुं.सं.) = आफत, मुसीबत

पठनीय

अन्य नीतिपरक दोहों का अपने पूर्वज्ञान तथा अनुभव के साथ मूल्यांकन करें एवं उनसे सहसंबंध स्थापित करते हुए वाचन कीजिए ।

लेखनीय

अपने अनुभववाले किसी विशेष प्रसंग को प्रभावी एवं क्रमबद्ध रूप में लिखिए ।

कल्पना पल्लवन

'निंदक नियरे राखिए' इस पंक्ति के बारे में अपने विचार लिखिए ।

आसपास

ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हिंदी साहित्यकारों की जानकारी पुस्तकालय, अंतरजाल आदि के द्वारा प्राप्त कर चर्चा करें तथा उनकी हस्तलिखित पुस्तिका तैयार कीजिए ।

मैं हूँ यहाँ

पाठ के आँगन में

https://youtu.be/Y_yRsbfbf9I

(१) 'नर की अरु नल नीर की .....' इस दोहे द्वारा प्राप्त संदेश स्पष्ट कीजिए ।

२) शब्दों के शुद्ध रूप लिखिए :

(क) घरु = ☐ (ख) उज्जलु = ☐

पाठ से आगे

दोहे प्रस्तुतीकरण प्रतियोगिता में अर्थ सहित दोहे प्रस्तुत कीजिए ।

भाषा बिंदु

निम्नलिखित मुहावरों, कहावतों में गलत शब्दों के स्थान पर सही शब्द लिखकर उन्हें पुनः लिखिए :–

मुहावरे – कहावतें

१. टोपी पहनना	१. .....
२. गीत न जाने आँगन टेढ़ा	२. .....
३. अदरक क्या जाने बंदर का स्वाद ।	३. .....
४. कमर का हार	४. .....
५. नाक की किरकिरी होना	५. .....
६. गेहूँ गीला होना	६. .....
७. अब पछताए होत क्या जब बंदर चुग गए खेत ।	७. .....
८. दिमाग खोलना ।	८. .....

रचना बोध

.....

.....

.....